दैनिक जागरण
शनिवार, 30 जनवरी 2010

आईपर लीडरशिप कान्क्लेव विसाज का आयोजन

कर्जा लेकर मत जियो : भावे

जागरण सिटी।

यदि युवाओं को आगे बढ़ना है तो उन्हें रिस्क लेनी ही होगी। रिस्क लेने की क्षमता भी सीमित होती है, दूसरे अर्थों में एक समय के बाद रिस्क नहीं लिया जा सकता। कर्जा लेकर मत जीएं और क्रेडिट कार्ड आदि को अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए अपनाएं। यह बात सेबी के चेयरमेन सीबी भावे ने कही। वे इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च आईपर द्वारा शुक्रवार को होटल नूरउससबा में आयोजित लीडरशिप कॉन्क्लेव में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

जिस प्रकार कुछ समय पहले विभिन्न संस्थानों द्वारा मंदी के चलते सेलरी कटडाउन कर दी गई थी या कई लोगों को जॉब से हटा दिया गया था, उसे देखते हुए युवाओं को अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए कर्ज आदि लेना चाहिए। उधार पर जिंदगी व्यतीत नहीं करनी चाहिए। गलाकाट स्पर्धा में नौकरी कब चली जाए कुछ कहा नहीं जा सकता, इसलिए युवाओं को खर्चीले होने बजाय सेविंग पर ध्यान देना चाहिए। परिवार और समाज के प्रति दायित्वों का निर्धारण करते हुए उन्होंने कहा कि नौकरी ही सब कुछ नहीं होती, बल्कि परिवार और समाज भी महत्वपूर्ण हैं। युवाओं में बढ़ते तनाव के संबंध में उन्होंने कहा कि तनाव का कारण जानने के लिए उसकी जड़ तक पहुंचना जरूरी होगा, तभी तनाव को कम करने की दिशा में सार्थक हल ढूंढा जा सकता है। आज के समय में केवल एक प्रतिशत युवाओं को ही उच्च शिक्षा उपलब्ध हो पा रही है। आने वाले अगले 10 सालों में इकोनॉमी की ग्रोथ बढ़ेगी ही, न कि कम होगी। युवाओं में रोजगार के अवसरों को पैदा करने के लिए मार्केट में ज्यादा से ज्यादा प्रोडक्ट प्रोवाइड कराने की आवश्यकता है। इस अवसर पर उन्होंने स्टाक एक्सचेंज की गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला और फ्यूचर करंसी पर अपने विचार प्रकट किए। शेयर बाजार का समय बढ़ाने के संबंध में उन्होंने कहा कि सेबी द्वारा समय बढ़ाने की अनुमति प्रदान कर दी गई है। सुबह का समय तो 9 बजे कर दिया गया है, लेकिन शाम का समय बढ़ाने का विचार अब संस्थानों को करना है। सत्यम घोटाले पर निवेशकों को हुए घाटे के संबंध में उन्होंने कहा कि यह निवेशक को सोचना होगा कि उसे कहां रुपया लगाना है। निवेशक को सोच-समझकर ही अपना रुपया निवेश करना चाहिए।

जब तक सोच नई, तब तक युवा : आशुतोष

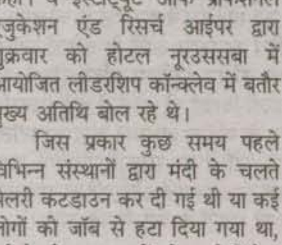

अभिनेता आशुतोष राणा ने कलाकारों के नई पीढ़ी विषय पर बोलते हुए कहा कि युवा होने का संबंध आयु से नहीं, अवस्था से है। जब तक आप नया सोच सकते हैं, तब तक आप युवा हैं। उन्होंने कहा कि कला का अर्थ है अपनी अभिव्यक्ति, जो निराकार महत्वाकांक्षा को साकार रूप में बदल दे। उन्होंने कहा कि सफलता तीन प्रकार 'कर्म, पुरूषार्थ और कृपा' से प्राप्त की जा सकती है। यह व्यक्ति के उपर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार सफलता अर्जित करना चाहता है। अपने विचारों को पूरा करने के लिए कर्म प्रधान है। व्यापार और व्यवसाय में अंतर बताते हुए उन्होंने कहा कि व्यापार वस्तुओं का आदान-प्रदान है, जो लाभ के उद्देश्य से किया जाता है।

युवाओं को सही दिशा की जरुरत : निरूपम

सांसद संजय निरूपम ने कहा कि युवाओं की फौज तैयार हो रही है, लेकिन फौज तैयार करने से काम नहीं चलेगा। युवाओं की फौज को सही दिशा और मार्गदर्शन देने की मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है, तभी वे देश के विकास में योगदान दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि राजनीति में युवाओं की भागीदारी बढ़ रही है, सिर्फ कांग्रेस ही नहीं, सभी पार्टियां युवाओं को राजनीति में आने के लिए प्रेरित कर रही हैं। युवाओं के लिए सर्विस, मेडिकल और कमर्शियल सेक्टर में काफी संभावनाएं हैं।

आईसीओएनजीओ के मेंटर जेरोनिनिओ अलमेडिया, रिलायंस इंडस्ट्रीज के वाइस प्रेसीडेंट फरहान अंसारी, एयरटेल के एचआर हेड विक्रम सिन्हा, महिला एवं बाल विकास विभाग के निदेशक गुलशन बामरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में चैतन्य शिक्षा समिति (आईपर पेरेंट बॉडी) के चेयरमेन केजे रावतानी, सीआईआई के सुभाष विठ्ठलदास, आईपर के डीन और कांफ्रेंस कन्वीनर डॉ. अमरजीत सिंह खालसा सहित आईपर संस्थान का समस्त फैकल्टी स्टाफ और स्टूडेंट्स उपस्थित थे।

नंबर सफलता के प्रतीक नहीं : डॉ. रंगराजन

आज के समय में बच्चों से ज्यादा उनके माता-पिता पढ़ रहे हैं। पढ़ाई रूचि के आधार पर होना चाहिए, न कि दबाव के आधार पर। यह बात आईआईएफटी के प्रोफेसर और हेड डॉ. के रंगराजन ने कही। उन्होंने कहा कि नंबर के पीछे भागने की बजाय, स्किल पर ध्यान देना जरूरी है। नंबर सफलता का प्रतीक नहीं है। उन्होंने कहा कि युवाओं में दिशा की कमी तो है ही, साथ में समय की भी कमी है। युवाओं को यह पता नहीं है कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं। युवाओं के पैसा तो भरपूर है, लेकिन वे इसका गलत तरीके से उपयोग कर रहे हैं। युवाओं को स्वरोजगार पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

विकास का प्रमुख स्रोत यूथ इंटरएक्शन : बिबेक

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. बिबेक देब्राय ने कहा कि युवा काम तो कर रहे हैं, लेकिन पॉलिसी मेकिंग में उनका योगदान कम है। देश का विकास इंफ्रास्ट्रक्चर और लेबर से नहीं होगा, बल्कि युवाओं को रिस्क उठानी चाहिए। आज के समय में युवा रिस्क ले रहे हैं और यही विकास का प्रमुख स्रोत है। इसके अलावा विकास का प्रमुख स्रोत यूथ इंटरेक्शन है, इसलिए युवाओं के साथ हमेशा इंटरेक्शन करते रहना चाहिए। 2013 तक बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।